Sem – II
Paper – I
Unit – I

प्र०। शिक्षा-दर्शन के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए और बताएं कि शिक्षक के लिए इसका अध्ययन क्यों आवश्यक है?

अथवा

शैक्षिक दर्शन की प्रकृति तथा कार्यों का संक्षिप्त विवेचन कीजिए।

अथवा

शिक्षा दर्शन का क्या अर्थ है तथा इसका अध्ययन एक शिक्षक के लिए क्यों आवश्यक है विस्तार में बताइये

अथवा

बिना शिक्षा-दर्शन के स्पष्ट ज्ञान के एक शिक्षक अपने कार्य में सफल नहीं हो सकता, इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं और क्यों।

अथवा

शिक्षा तथा दर्शन में गहरा सम्बन्ध है वर्णन कीजिए।

शिक्षा दर्शन: अर्थ, आवश्यकता, इसकी प्रकृति तथा कार्य :-

परिचय :-

शिक्षा और दर्शन का आपस मे घनिष्ट सम्बन्ध है अत: दर्शन और शिक्षा के घनिष्ट सम्बन्धों के कारण इन दोनों विषयों के मेल से 'शिक्षा-दर्शन' नामक एक नये विषय का विकास हुआ। दर्शन मानव-जीवन का लक्ष्य निर्धारित करता है और हम इन लक्ष्यों की प्राप्ति शिक्षा के द्वारा करते हैं परन्तु दार्शनिक यह निश्चित करते हैं कि लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षा का स्वरूप कैसा होना चाहिए। जिस प्रकार दार्शनिक अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षा का सहारा लेता है उसी प्रकार शिक्षा ~~शास्त्रि~~ शास्त्री दर्शन का सहारा लेते हैं। उनके समान जब कोई समस्या आती है तो वे उनका समाधान दर्शन की सहायता से करते हैं। अत: दोनों की परस्पर निर्भरता से शिक्षा-दर्शन का विकास हुआ। कुछ व्यक्तियों की धारणा है कि शिक्षा-दर्शन दर्शन का वह भाग है जो जीवन एवं शिक्षा के लक्ष्य निश्चित करता है शिक्षा की समस्याओं का अध्ययन का अध्ययन करता है उनका हल ढूंढता है और शिक्षा की प्रक्रिया के स्वरूप को निश्चित करता है। दूसरे शब्दों में शिक्षा दर्शन एक ऐसा विषय है जो दर्शन के दृष्टिकोण से शिक्षा के समस्त कार्यों, क्रियाओं, समस्याओं आदि

का अध्ययन करता है, समस्याओं का समाधान करता है और शिक्षा की प्रक्रिया को उचित दिशा मे मोड़ देता है।

दर्शन शब्द का अर्थ:-

दर्शन शब्द अंग्रेजी भाषा के Philosophy शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। अंग्रेजी भाषा के फिलास्फी शब्द का अर्थ है "ज्ञान प्रीति" या "तर्क विद्या" इस प्रकार दर्शन शब्द का अर्थ है ज्ञान प्राप्ति अर्थात् तर्क शक्ति का विकास करना।

शिक्षा-दर्शन की परिभाषा:-

शिक्षा-दर्शन के अर्थ के सम्बन्ध मे अलग-2 शिक्षा-शास्त्रियों ने अपने अलग-2 विचार दिए है-

- हैन्डरसन के अनुसार:- "शिक्षा की समस्याओं के अध्ययन में दर्शन का प्रयोग है।"

2 जॉन डीवी ने शिक्षा-दर्शन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा है-

"शिक्षा-दर्शन सामान्य दर्शन का कमजोर सम्बन्धी नहीं, यद्यपि दार्शनिकों ने भी इसको ऐसा ही माना है। अन्तिम रूप

में यह दर्शन का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है, क्योंकि शिक्षा की प्रक्रिया से ही ज्ञान प्राप्त होता है।"

अतः हम कह सकते है कि शिक्षा दर्शन, दर्शन का वह भाग है जो शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं पर विचार करता है। शिक्षा दर्शन का ज्ञान प्राप्त करने यह आवश्यक है कि अध्यापक को दर्शन का ज्ञान हो तभी वह इसे शिक्षा के क्षेत्र में क्रियान्वित कर सकता है।

शिक्षा-दर्शन की आवश्यकता एवं महत्व :- प्रत्येक अध्यापक के लिए शिक्षा-दर्शन का ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य है। शिक्षा के क्षेत्र में कई समस्याओं पर उसे अपने विचार व्यक्त करने पड़ते हैं और निर्णय भी लेने पड़ते हैं। लेकिन आधुनिक युग में प्रत्येक समस्या का हल करने के लिए कई तरीके हैं इनमें से कौन-सा तरीका चुनना चाहिए यह जानने के लिए शिक्षा-दर्शन का सहारा लेना पड़ता है।

1 शिक्षा के स्वरूप का ज्ञान :- विभिन्न दार्शनिकों ने शिक्षा से सम्बंधित जो विचार प्रकट किए हैं उनके अध्ययन से शिक्षा के वास्तविक स्वरूप का पता लगता है और शिक्षा के

उद्देश्य भी स्पष्ट होते हैं। विभिन्न युगों में दार्शनिकों ने शिक्षा की क्या व्याख्या की है इसका ज्ञान प्राप्त होता है और इसके आधार पर अध्यापक शिक्षा की वर्तमान समस्याओं को सुलझाने में सफल हो सकता है।

2. जीवन से सम्बन्धित रहस्यों, उद्देश्यों एवं अनुभवों के ज्ञान की प्राप्ति में आवश्यक :-

एक शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह मानव जीवन के स्वरूप, रहस्य एवं अन्तिम उद्देश्यों तथा अनुभवों से परिचित हो जाये। इन बातों के तथा अपने अनुभव एवं विवेक से वह अपना दृष्टिकोण बना लेता है। इन सबका ज्ञान उसे शिक्षा दर्शन से ही मिलता है। इस ज्ञान के आधार पर वह मार्ग दर्शन करता है और शिक्षा की व्यवस्था करता है।

3. शिक्षकों को अपने कर्तव्यों के ज्ञान के लिए आवश्यक :-

शिक्षा प्रक्रिया चलाने एवं बालकों का समुचित विकास करने के लिए शिक्षा प्रक्रिया में शिक्षक का स्थान महत्वपूर्ण है। बालक के प्रति, समाज के प्रति, विद्यालय के प्रति उसके

अनेक कर्तव्य हैं। इन कर्तव्यों का ज्ञान शिक्षक को होना चाहिए तभी वह शिक्षा की प्रगति में योगदान दे सकता है। समय के अनुसार शिक्षा-दर्शन के अध्ययन से वह अपना कर्तव्य निश्चित कर सकता है। इसी प्रकार शिक्षा प्रणाली के गुण-दोषों का विवेचन शिक्षा-दर्शन के द्वारा कर सकता है। शिक्षक के लिए इन गुण-दोषों का ज्ञान होना आवश्यक है तभी वे शिक्षा प्रणाली के सुधार हेतु उचित दृष्टिकोण अपना सकता है। इन सब कार्यों में शिक्षा-दर्शन की आवश्यकता होती है। अतः उनके लिए शिक्षा-दर्शन का अध्ययन बहुत आवश्यक है।

स्वस्थ जीवन-दर्शन के चुनाव में आवश्यक :-

दर्शन ब्रह्माण्ड के प्रति एवं मानव जीवन के प्रति विभिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। इन दृष्टिकोणों / विचारों का अध्ययन करके व्यक्ति स्वयं अपना दर्शन चुनता है अर्थात अपना मार्ग बनाता है जो शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित करता है। जिस व्यक्ति का जीवन दर्शन नहीं होता वह अच्छा शिक्षक नहीं बन सकता क्योंकि जब उसका जीवन दर्शन ही नहीं नहीं होगा तब वह शिक्षा के किस उद्देश्य की प्राप्ति करेगा। इसलिए प्रत्येक शिक्षक के लिए शिक्षा-दर्शन का ज्ञान होना आवश्यक है जिससे वह जीवन-दर्शन का चयन कर सके।

5. शिक्षा की प्रक्रिया के ज्ञान में सहायक:-

शिक्षा दर्शन में शिक्षा की प्रक्रियाओं पर भी विचार किया जाता है और निर्णय लिया जाता है कि शिक्षा की प्रक्रिया में किसका अधिक महत्व है अध्यापक या विद्यार्थी का। प्रकृतिवादी यदि विद्यार्थी को अधिक महत्व देते हैं तो आदर्शवादी उसे शिक्षा की प्रक्रिया में गौण समझते हैं।

6. विद्यालय का स्वरूप निश्चित करने के लिए:-

शिक्षा में विद्यालय का स्थान एवं महत्व पर दार्शनिकों में परस्पर मतभेद है इसी प्रकार विद्यालय के स्वरूप पर भी मतभेद है। इसलिए विद्यालयों का स्वरूप एवं शिक्षा में उनका स्थान निश्चित करने के लिए यह आवश्यक है कि विभिन्न मतों का अध्ययन किया जाए लेकिन शिक्षा-दर्शन के अध्ययन से ही इन बातों का ज्ञान हो सकता है इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षक शिक्षा-दर्शन का अध्ययन करें और तत्पश्चात विद्यालयों के स्वरूप तथा कर्तव्यों को निश्चित करें।

7. शिक्षा की समस्याओं व उनके समाधान का ज्ञान:-

शिक्षा के क्षेत्र में कुछ समस्याएँ हैं जो प्राचीन काल से लेकर अब तक चली आ रही हैं प्रत्येक समस्या को तत्कालीन परिस्थितियों में देखते हुए अनेक

तरीकों से हल किया गया है। शिक्षा-दर्शन हमें यह बताता है कि किसी शैक्षिक समस्या को किसी विचारधारा ने किस प्रकार से हल किया है। इस प्रकार अध्यापक के ज्ञान में पर्याप्त वृद्धि होती है और वह स्वयं समस्या के कई समाधान ढूंढ सकता है।

8. बालकों में अनुशासन की स्थापना के लिए आवश्यक :-

आज विद्यालयों में अनुशासन की समस्या ने उग्र रूप धारण कर लिया है। आज बालकों को डरा कर अनुशासित नहीं किया जा सकता। इस समस्या का समाधान बालकों को आत्म-अनुशासन की शिक्षा देकर किया जा सकता है। इस कार्य में शिक्षा-दर्शन शिक्षक की सहायता कर सकता है। शिक्षा-दर्शन में इस समस्या पर विचार किया जाता है और अनुशासन के स्वरूपों एवं अनुशासन स्थापित करने की विधियों की व्याख्या की जाती है। अतः शिक्षक के लिए शिक्षा-दर्शन का अध्ययन आवश्यक है।

9. पाठ्यक्रम-संगठन सम्बन्धी ज्ञान के लिए आवश्यक :-

शिक्षा के उद्देश्य के साथ-2 एक शिक्षक के लिए यह भी आवश्यक है कि वह विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रतिपादित पाठ्यक्रम-निर्माण संबंधी ज्ञान से अवगत हो जाये। इस ज्ञान से वह इस योग्य हो जाता है कि आवश्यकता पड़ने पर वह

परिस्थिति के अनुसार पाठ्यक्रम में परिवर्तन करके शिक्षा को सही मार्ग पर आगे बढ़ा सकता है। अतः शिक्षक को उक्त बातों का ज्ञान होना चाहिए जो केवल शिक्षा-दर्शन के अध्ययन से ही सम्भव हो सकता है।

10. शिक्षा के स्वरूप एवं उद्देश्यों एवं अनुभवों के ज्ञान की प्राप्ति के लिए आवश्यक :- किसी भी व्यक्ति को अपने कार्य में सफलता करने लिए यह आवश्यक है कि उसे अपने कार्य के स्वरूप एवं उसके उद्देश्य का ज्ञान हो और यही स्थिति एक शिक्षक की होती है। अपने व्यवसाय अर्थात् शिक्षण को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए यह आवश्यक है कि उसे शिक्षा के स्वरूप तथा उसके उद्देश्यों का ज्ञान हो। इनका ज्ञान उसे शिक्षा-दर्शन से ही प्राप्त हो सकता है।

शिक्षा-दर्शन की प्रकृति या स्वरूप

शिक्षा में जब हम दार्शनिक दृष्टिकोण अपनाते हैं तो शिक्षा दर्शन का जन्म होता है। यह शिक्षा-दर्शन क्या है? जब हम दर्शन के स्वरूप पर विचार कर रहे थे तो वहाँ दर्शन विभिन्न विभागों में शिक्षा-दर्शन को भी एक विभाग के रूप में देखा था और जब हम शिक्षा पर विचार कर रहे थे तो हमने शिक्षा-दर्शन को शिक्षा की एक शाखा के रूप में देखा था

1 शिक्षा-दर्शन मौलिक-सिद्धान्तों की खोज करता है:-

कुछ विचारकों का मत है कि दर्शन में मौलिक सिद्धान्तों की खोज होती है और उन सिद्धान्तों को शिक्षा में लागू किया जाता है। इस प्रकार शिक्षा दर्शन में दार्शनिक सिद्धान्तों का शिक्षा के क्षेत्र में व्यवहार किस प्रकार होता है और किस प्रकार होना चाहिए इसे बताता है।

सामाजिक कठिनाइयों का समाधान:-

शिक्षा दर्शन के अन्तर्गत तत्कालीन सामाजिक कठिनाइयों के प्रति उचित दृष्टिकोण बनाने की समस्या का स्पष्टीकरण होता है। अतः शिक्षा-दर्शन को बाध्य सिद्धान्तों विशाल रूप नहीं समझना चाहिए। उनके अनुसार तो दर्शन स्वयं ही शिक्षा का सिद्धान्तीकरण है। डीवी एवं उनके समर्थक शिक्षा दर्शन को व्यवहारिक मानते हैं। इस विचार के अनुसार अब तक दर्शन ने अपना कार्य ठीक प्रकार से नहीं किया है। दर्शन ने अपने समक्ष ऐसी समस्याएं रखी, जिनका समाधान हो ही सकता। दर्शन का वास्तविक कार्य शिक्षा की समस्याओं का समाधान ढूंढना है। इस युक्ति से सम्पूर्ण दर्शन ही शिक्षा-दर्शन है या यों कहिए कि दर्शन को शिक्षा दर्शन होना ही चाहिए।

3 शिक्षा-दर्शन शिक्षा की एक शाखा के रूप में :-

शिक्षा दर्शन के अन्तर्गत हम शिक्षा दर्शन का अध्ययन शिक्षा की एक शाखा के रूप में करते हैं। इससे यह विदित होता है कि कि शिक्षा-दर्शन वह विषय है, जिसमें शिक्षा और दर्शन दोनों का योगदान होता है।

4 आध्यात्मिकता :-

भारतीय दर्शन में मूल रूप से आध्यात्मिक प्रवृत्ति है। आध्यात्मिकता के कारण यह सदैव व्यापक समय व ऐतिहासिक हमलों में भी दृढ़ व स्थिर रहा है। बाहरी आक्रमण व घृणा के बावजूद इसने अपने अस्तित्व व आध्यात्मिकता के प्रकाश का संरक्षण किया है। भारतीय दर्शन बुद्धि संकेतों अन्वेषण के प्रति मानव के प्रयासों का इतिहास है। भारतीय दर्शन की सभी पद्धतियाँ लगभग आत्मा में विश्वास रखती हैं तथा उसकी सही प्रकृति खोजने में प्रयासरत है। केवल आत्मा की खोज ही उपनिषदों से लेकर सांख्य योग, न्याय तथा वेदान्त तक सभी दार्शनिक पद्धतियों का अंत है। केवल आध्यात्मिक उद्देश्य ही सभी भारतीय दार्शनिक पद्धतियों को आचार संहिता और धर्म से उच्चतर स्थान प्रदान करता है।

विचारों की स्वतंत्रता :-

विचारों की स्वतंत्रता भारतीय शैक्षिक दर्शन का एक लक्षण है। मानव के विचार संसार में सदैव स्वतंत्र है। यह विचारों की स्वतंत्रता के कारण ही है कि भारत में भौतिकवादी, आनंदवादी तथा आध्यात्मवादी दार्शनिक पनपे हैं। महाभारत के अनुसार- यहां एक भी ऐसा साधु नहीं जिसके अपने विचार न हो अर्थात सभी साधुओं के अपने-2 विचार होते हैं।

अज्ञानता का बंधन :-

भारतीय दर्शन विचार धारा के सभी विद्यालय स्वीकारते हैं कि अज्ञान या अविद्या कष्ट का कारण है। मनुष्य अज्ञानता वश बंधन में पड़ता है सारे सांसारिक बंधन जैसे जन्म, मृत्यु, लालच तथा निहित आशंका केवल अज्ञानता के कारण है। भारतीय दर्शन की सभी विचारधाराएं स्वीकारती है कि बन्धन अर्थात संसार से मुक्ति दिलाता है जब अज्ञानता का अंधेरा दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलता है।

कर्म में आस्था :-

लगभग सभी भारतीय दार्शनिक कर्म सिद्धान्त में विश्वास रखते हैं उनके अनुसार कर्म का नियम दृढ़ है मनुष्य कर्म जैसा कर्म करता है उसी के अनुसार दुःखी एवं सुखी होता है।

अच्छे कर्मों के करने से खुशी मिलती है और बुरे कर्मों से दुःख। मनुष्य का जन्म, शरीर व जीवन केवल उसके कर्मों से निर्धारित है। कर्मों के फल को भोगना आवश्यक है। अतः शिक्षा-दर्शन के अन्तर्गत भी यही नियम लागू होता है कि शिक्षा में सफल होना उसके कर्म पर आधारित है। वह जितनी मेहनत करता है उसे वैसा ही फल मिलता है।

8. नैतिकता में विश्वास :-
भारतीय दर्शन सार्वभौमिक नैतिक व्यवस्था में विश्वास रखता है। यह सार्वभौमिक नैतिक व्यवस्था ऋग्वेद में ऋत कही जाती है। मीमांसा में इसे अपूर्व कहते हैं न्याय तथा वैशेषिक विचारधाराओं में अदृष्ट कहा जाता है। इसके अनुसार मनुष्य व देवता इस अनन्त नैतिक व्यवस्था की अनुपालना करते हैं। यह ऋत ही गुणों व अवगुणों तथा अच्छे व बुरे कर्मों को निर्धारित करता है इस आधार पर ही कर्मों के फल भोगता है।

9 मनोवैज्ञानिक आधार :-
भारतीय शैक्षिक दर्शन का आधार मनोवैज्ञानिक है। भारतीय दार्शनिक विचारधारा के विभिन्न विद्यालयों ने दर्शन के मनोवैज्ञानिक पक्ष पर जोर दिया है। बुद्ध से पतंजलि, शंकराचार्य

रामानुज आदि सभी विचारकों ने दर्शन के मनोवैज्ञानिक पक्ष का गहन विश्लेषण किया है। भारतीय शैक्षिक दर्शन जीवन के अनुभवों पर आधारित है। अतः दार्शनिकों ने उन अनुभवों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है। भारतीय योगाभ्यास मन को स्थिर रखने तथा शारीरिक व मानसिक रोगों के इलाज के लिए महत्वपूर्ण समझे जाते हैं।

10. धर्म व दर्शन में समन्वय :-

भारतीय शैक्षिक दर्शन में धर्म व दर्शन की समस्याओं में बहुत कम अन्तर देखा गया है। भारतीय दर्शन तथा धर्म दोनों का उद्देश्य हमेशा जीवन का रूपान्तर तथा सांसारिक कष्टों से मुक्त रहा है। विचार, धर्म और जीवयापन सभी एक ही ध्येय है और वह केवल ब्राह्मण। विभिन्नता में एकता की कल्पना ब्राह्मण के अस्तित्व की भावना के द्वारा है और यही भारतीय दर्शन का अन्तिम ध्येय है। दूसरे शब्दों में, नामों से सभी नदियाँ अन्त में सागर में मिलती है और एक हो जाती है। ठीक उसी प्रकार भारतीय शैक्षिक दर्शन में आदर्श जो कि एक है का संश्लेषण है और मानव जीवन में परिलक्षित करना है तथा मानव की रुचि शिक्षा के द्वारा धर्म के मार्ग पर चलने के प्रोत्साहित करती है तथा मानव को सद्मार्ग दिखाना है।

निष्कर्ष :-

अन्त मे हम शिक्षा-दर्शन के बारे मे कह सकते है कि शिक्षा दर्शन की मानव जीवन मे उतनी ही उपयोगिता है जितनी उसे अपनी बेसिक चीजों की पडती है क्योंकि शिक्षा दर्शन मानव को सदमार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है उसकी ईश्वर मे आस्था को बढ़ाती है। शिक्षा-दर्शन मे शिक्षक अपने उद्देश्यों को जब तक प्राप्त नही कर सकता जब तक वह शिक्षा-दर्शन का पूर्ण-ज्ञान प्राप्त नही कर लेता। शिक्षा-दर्शन मे हमने शिक्षा-दर्शन की प्रकृति का अध्ययन किया है जो मौलिक व व्यवहारिक सिद्धान्तों पर आधारित है जो मनुष्य के व्यवहार को क्रियान्वित करती है। एक शिक्षक शिक्षा-दर्शन के ज्ञान के बिना न तो शिक्षा के विभिन्न अंगों के स्वरूपों को समझ सकता है और न ही शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं का समाधान कर सकता है। इसके अतिरिक्त न ही वह समाज के बदलते हुए स्वरूप से शिक्षा का तालमेल बैठा सकता है इसलिए एक शिक्षक को एक दार्शनिक होना चाहिए तभी वह एक सच्चा शिक्षक बन सकता है।

Relationship

2. शिक्षा तथा दर्शनशास्त्र एक ही सिक्के के दो पहलू हैं" व्याख्या कीजिए।

अथवा

शिक्षा दर्शन का गत्यात्मक रूप है विवेचना कीजिए।

अथवा

दर्शन शास्त्र के बिना शिक्षा नेत्रहीन है तथा दर्शनशास्त्र शिक्षा के बिना अपूर्ण है। व्याख्या कीजिए।

अथवा

शिक्षा और दर्शन में परस्पर क्या संबंध है? ये एक दूसरे को किस प्रकार प्रभावित करते है?

अथवा

"दर्शन के बिना शिक्षा अंधी है और शिक्षा के बिना दर्शन पंगु है" इस कथन की रोशनी में दर्शन तथा शिक्षा के संबंध में चर्चा कीजिए।

अथवा

शिक्षा दर्शन का क्रियात्मक पहलू है तथा दर्शन शिक्षा का बौद्धिक पहलू है।" इस कथन से तुम कहाँ तक सहमत हो? कारण बताओ

अथवा

दर्शन शास्त्र से आपका क्या अभिप्राय है? दर्शनशास्त्र तथा शिक्षा के संबंध का वर्णन कीजिए।

उत्तर:- प्रस्तावना (Introduction) शिक्षा और दर्शन का संबंध आदिकाल से अटूट है। अर्थात् शिक्षा और दर्शन एक दूसरे के पूरक हैं। शिक्षा का उद्देश्य, व्यवस्था तथा संगठन और शिक्षण विधियों का विकास समझने के लिए दार्शनिक विचारधाराओं का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। तभी फिशे ने कहा है, शिक्षा-दर्शन की सहायता के बिना पूर्णता और स्पष्टता को प्राप्त नहीं कर सकती है।

प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री रॉस ने कहा है कि, "दर्शन और शिक्षा" एक ही सिक्के के दो पक्ष हैं जो एक ही वस्तु के विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करते हैं। शिक्षा जीवन का क्रियात्मक पक्ष है और दर्शन जीवन का विचारात्मक पक्ष है।

शिक्षा तथा दर्शन में घनिष्ट संबंध है। शिक्षा मानव जीवन ~~का~~ के विकास का साधन है। परिस्थितियों के निर्माण में शिक्षा का विशेष हाथ है। दर्शन लक्ष्य का निर्माण करता है और शिक्षा इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए साधन के रूप में कार्य करती है। यदि हम शिक्षा और दर्शन के इतिहास को देखें तो हमें पता चलता है कि संसार की सभी युगों के महान दार्शनिक महान शिक्षा शास्त्री भी रहे हैं। वे सभी शैक्षिक विचारधारायें जिनको इन महान दार्श

ने प्रतिपादन किया वे वास्तव में उनके दार्शनिक सिद्धान्तों और मान्यताओं पर ही आधारित हैं।

महान दार्शनिक सुकरात जिन्होंने परम्परागत मान्यताओं के विरूद्ध विरोध किया वे संसार के महानतम शिक्षकों में से एक थे। लोगों के अव्यवस्थित ज्ञान को व्यवस्थित करने के लिए उन्होंने प्रश्नोत्तर विधि का निर्माण किया था। इसलिए इस विधि को हम 'सुकराती विधि' के नाम से पुकारते हैं। संसार का महान दार्शनिक प्लेटो महान शिक्षाशास्त्री था जिसने एक आदर्श राज्य तथा शिक्षा व्यवस्था की रूपरेखा प्रस्तुत की। इसी प्रकार रूसो एक महान शिक्षा शास्त्री माना जाता है जिसने शिक्षा प्रणाली में क्रान्तिकारी परिवर्तन किया।

जॉन डयूवी प्रयोजनवाद का प्रमुख प्रवर्तक था जिसने अपने दर्शन से शिक्षा में क्रान्ति उपस्थित की। इनके अतिरिक्त पेस्टालॉजी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी, स्वामी दयानंद, महर्षि अरविन्द घोष आदि महान दार्शनिक थे जिन्होंने अपनी विचारधाराओं से शिक्षा को अनेक प्रकार से प्रभावित किया है।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि दर्शन और शिक्षा में घनिष्ट संबंध है। डयूवी ने इस संबंध में कहा है कि, "दर्शन को शिक्षा का सामान्य सिद्धान्त कहा जा सकता है।"

दर्शन का अर्थ:- दर्शन जिसे अंग्रेजी में Philosophy कहते हैं. यूनानी भाषा के दो शब्दों Philos तथा Sophia शब्दों से मिलकर बना है Philos का अर्थ प्रेम Love तथा Sophia का अर्थ है ज्ञान। इस प्रकार प्लेटो ने दर्शन का अर्थ ज्ञान से प्रेम करना माना है। उसके अनुसार "वह व्यक्ति जो प्रत्येक प्रकार के ज्ञान के लिए रुचि रखता है तथा जो सीखने का इच्छुक हो तथा जिसकी सीखते - सीखते संतुष्टि नहीं होती, दार्शनिक कहा जाता है।

रॉस के शब्दों में, "दर्शन तथा शिक्षा एक सिक्के के दो पहलू हैं, एक में दूसरा निहित है। पहला जीवन का विचार शील पक्ष है जबकि दूसरा उसका सक्रिय पहलू है। दोनों में संबंध जानने से पहले हमें दर्शन तथा शिक्षा का अर्थ जानना बहुत आवश्यक है।"

सुकरात के अनुसार:- दार्शनिक वे हैं, जो सत्य के दर्शन के प्रेमी (इच्छुक) होते हैं।"

प्लेटो ने कहा है कि:-

"वास्तव में दार्शनिक वही कहा जा सकता है जिसकी हर प्रकार के ज्ञान के विषय में रुचि हो और जो सीखने के लिए उत्सुक रहे तथा जो सज्ञान से कभी संतुष्ट न हो।"

हिन्दी भाषा में दर्शन शब्द का अर्थ 'दृश' अथवा 'देखना' है। अतः दर्शन का शाब्दिक अर्थ है। जिसके द्वारा देखा जाए। 'यहाँ देखा जाये' का अभिप्राय है ज्ञान प्राप्त किया जाये। इस प्रकार दर्शन का अर्थ है जिसके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाए।

दर्शन का विशिष्ट अर्थ:-

विशिष्ट तथा आंशिक प्रत्यक्ष रूप में दर्शन का अर्थ अमूर्त चिंतन करने के उस प्रयत्न से है जिसके द्वारा आत्मा, परमात्मा, प्रकृति, जगत तथा समूचे जीवन का रहस्य जाना जाता है।

इस दृष्टि से मनुष्य क्या है? जीवन क्या है? वास्तविक जीवन का उद्देश्य क्या है? इस संसार की प्रकृति क्या है? सूर्य चन्द्रमा तथा सितारों आदि का मूल स्थान कौन-सा है।

व्यक्ति संसार में क्यों आया है? ईश्वर का स्वरूप क्या है। मृत्यु क्या है? क्या मानव जीवन तथा प्रकृति से परे कोई लोक है? व्यक्ति संसार में मृत्यु के पश्चात कोई और जन्म होगा? इस प्रकार की बातों की खोज करके उस चिन्तन सत्य को प्रकट करना दर्शन का मुख्य विषय है।

शिक्षा-दर्शन का अर्थ:-

शिक्षा दर्शन, दर्शन की वह शाखा है जिससे शिक्षा की समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। उनका समाधान प्रस्तुत किया जाता है और शिक्षा की प्रक्रिया के स्वरूप को निश्चित किया जाता है। शिक्षा दर्शन आत्मा क्या है जीव क्या है, सृष्टि की उत्पत्ति कैसे हुई। आदि प्रश्नों पर विचार करता है उसी प्रकार शिक्षा-दर्शन शिक्षा संबंधी प्रश्नों जैसे शिक्षा क्या है, शिक्षा के उद्देश्य क्या हैं? शिक्षा के मूल्य क्या हैं? पाठ्यक्रम कैसा हो, शिक्षण विधि कैसी हो? अनुशासन की संकल्पना क्या हो। आदि प्रश्नों पर विचार करके उनका हल प्रस्तुत करता है।

दर्शन का शिक्षा पर प्रभाव या शिक्षा का दार्शनिक आधार :—

क) दर्शन का शिक्षा के विभिन्न अंगों से संबंध :

शिक्षा और दर्शन के आपसी संबंधों से परिचित होने के पश्चात अब हम, दर्शन का शिक्षा पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है उसके बारे में विस्तृत अध्ययन करेंगे।

क) दर्शन तथा शिक्षा के उद्देश्य :—

प्रत्येक कार्य की तरह शिक्षा का भी निश्चित उद्देश्य होता है, क्योंकि बिना उद्देश्य शिक्षा अंधकार में छलांग मारने के समान है। वस्तुतः शिक्षा एक सोद्देश्य प्रक्रिया है। शिक्षा एक सुनियोजित एवं उद्देश्यपूर्ण क्रिया है। इसलिए शिक्षा के कई उद्देश्य होते हैं ये उद्देश्य जीवदर्शन द्वारा निर्धारित होते है। दर्शन गम्भीर, अन्तर्दृष्टि तथा मौलिक चिन्तन के आधार पर शिक्षा के उद्देश्यों का निर्माण करता है। शिक्षा का मुख्य कार्य व्यक्ति को प्राकृतिक प्रकोपों से बचाने की क्षमता प्रदान करना है परिणाम स्वरूप शिक्षा के उद्देश्य निम्न लिखित है —

शिक्षा के उद्देश्य

I शारीरिक शक्ति को उत्पन्न करना
II बलवान योद्धाओं का निर्माण करना
III नागरिकों में देश-प्रेम की भावना भरना
IV उन्हें उत्साही, साहसी तथा राज्य के प्रति आज्ञाकारी बनाना

(ख) दर्शन तथा पाठ्यक्रम — दर्शन के दो पक्ष होते हैं- एक सैद्धान्तिक तथा दूसरा क्रियात्मक। पाठ्यक्रम शिक्षा की विषय-वस्तु है। इसे शिक्षा का क्रियात्मक पक्ष कहा जाता है। शिक्षा-दर्शन अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पाठ्यक्रम निर्धारित करता है। पाठ्यक्रम शिक्षा के उद्देश्यों के अनुसार बनाया जाता है। शिक्षा के उद्देश्य के उद्देश्यों के अनुसार निर्धारित किये जाते हैं तथा जीवन के उद्देश्यों पर दर्शन का बहुत प्रभाव होता है। विभिन्न सिद्धान्तों के आधार पर विभिन्न पाठ्यक्रम बनाए जाते हैं। पाठ्यक्रम में प्राकृतिक घटनाओं को प्रधानता देता है, मातृ-भाषाओं को भी विशेष स्थान प्रदान करता है। तथा व्यवहारिकता पर बल दिया जाता है।

दर्शन तथा शिक्षण विधियाँ :-

दर्शन का शिक्षण विधियों से घनिष्ठ संबंध है। जीवन के आदर्श की प्राप्ति के लिए किस शिक्षण विधि का प्रयोग किया जाए, यह दर्शन का विषय है। दर्शन शिक्षण का लक्ष्य बतलाता है। दर्शन प्राचीन तथा प्रचलित शिक्षण विधियों के गुण दोषों की खोज करता है और इन दोषों से बचने के लिए निर्देश देता है, जिससे इसका अधिक से अधिक सदुपयोग किया जा सके। साथ ही दर्शन प्राचीन तथा प्रचलित शिक्षण विधियों के गुण-दोषों का स्पष्टीकरण ही नहीं करता अपितु इनका निर्माण भी करता है।

प्रकृतिवाद दर्शन के अनुसार बालक शिक्षा का केन्द्र बिन्दु है। इसलिए समस्त शिक्षा कार्य उसकी मूल प्रवृत्तियों, इच्छाओं, रूचियों और आवश्यकताओं के अनुसार होना चाहिए।

दर्शन तथा अनुशासन :-

किसी भी देश या समाज के जीवन में अनुशासन का बड़ा महत्व है। अनुशासन की भावना पैदा करने में विद्यालय या स्कूल प्रमुख हैं। परन्तु विद्यालय का अनुशासन देश और काल की दार्शनिक विचारधाराओं पर आधारित होता है। प्राचीन भारत में जीवन का अंतिम उद्देश्य धर्म पर आश्रित था, इसलिए गुरु को महान स्थान प्राप्त था और उसकी आज्ञाओं

का पालन करना प्रत्येक विद्यार्थी का परम कर्तव्य था अनुशासन के तीन रूप बताए है जो इस प्रकार है—

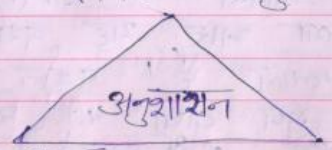

इस प्रकार तानाशाही तथा साम्यवादी देशों में दमनात्मक अनुशासन लागू किया जाता है लेकिन जनतंत्र में प्रभावात्मक तथा मुक्तात्मक अनुशासन लागू किया जाता है।

5 दर्शन तथा पाठ्य-पुस्तकें :—

दार्शनिक विचारधाराओं का प्रभाव पाठ्य पुस्तकों पर भी पड़ता है। देश और समाज की दार्शनिक विचारधाराओं के अनुरूप ही पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण किया जाता है। प्रचलित विचारधाराओं के विपरीत समाज में जो पुस्तकें होती है उनका बहिष्कार होता है। आज हमारे देश के आदर्श है - जनतंत्र, धर्म निरपेक्षता और समाजवाद। अतः हमारे देश में ऐसी ही पुस्तकें निर्मित की जा रही है जिनमें देश

हमारे देश और समाज के आदर्श प्रतिबिंबित होते हैं

च) दर्शन तथा अध्यापक :-

प्रत्येक अध्यापक एक प्रकार से दार्शनिक है। शिक्षा देश की रीढ़ की हड्डी है और शिक्षक शिक्षा प्रणाली का प्रमुख अंग है। बालक के ऊपर शिक्षक का सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक शिक्षक के अपने निश्चित सिद्धान्त, मान्यताएँ और आदर्श होते हैं चाहे वह आदर्शवादी हो या निराशावादी, भौतिकवादी हो या आशावादी। दर्शन के अध्ययन से जहाँ एक ओर शिक्षक का ज्ञान बढ़ता है वहीं दूसरी ओर उसमें नैतिकता, व्यवहार, कर्तव्य आत्मविश्वास और चारित्रिक दृढ़ता आदि गुणों का विकास होता है। दर्शन से शिक्षक को शिक्षण प्रक्रिया को संचालित करने में सहायता मिलती है।

शिक्षा का दर्शन पर प्रभाव :-

1. शिक्षा दर्शन को जिन्दा रखती है।
2. शिक्षा दर्शन को गतिशील बनाती है।
3. शिक्षा - दर्शन के विकास में मदद करती है।
4. शिक्षा - दर्शन को जन्म देती है।

निष्कर्ष :-

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि दर्शन और शिक्षा एक - दूसरे पर आश्रित हैं। दोनों में घनिष्ठ संबंध है। शिक्षा और दर्शन एक दूसरे को किसी न किसी रूप में प्रभावित करते हैं। शिक्षा दर्शन को गतिशील बनाए रखती है। एक के अभाव में दूसरे के अस्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती।